IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कुमाऊँ–गढ़वाल के शिल्पकारों की परम्परागत प्रौद्योगिकी में टम्टा कारीगरों के सन्दर्भ में समाजशास्त्रीय विश्लेषण

सुमन कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
समाजशास्त्र
पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, रामनगर, नैनीताल

सारांश–यदि मानवीय समाज, सभ्यताऐं की प्राचीन तथा आधुनिक स्थितियों, संरचनाओं को तुलनात्मक रूप में देखें तो यह तथ्य हमारे सम्मुख आता है कि आदि मानव से आधुनिक मानव और उसकी सामाजिक–सांस्कृतिक उन्नति एवं विकास उसके द्वारा खोजी या आविष्कार किये जाने वाली प्रौद्योगिकी कौशल के कारण के माध्यम से ही सम्भव हुआ है। भोजन का उत्पादन, भोजन बनाना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना, सुरक्षा बीमारियों पर नियंत्रण पाना, जीव आदि और मानव जीवन को अनुकूल एवं सुविधापूर्ण बनाना कहीं न कहीं प्रौद्योगिकी के आविष्कारों के साथ सीधा जुड़ा है। सामाजिक–ऐतिहासिक, वैज्ञानिक विश्लेषणों में यह पाया जाता है कि मनुष्य सरल प्रौद्योगिकी के आविष्कारों से शुरू होकर जटिलतम प्रौद्योगिकी तक पहुंचा प्राचीन तथा आदिम समाज की प्रौद्योगिकी बहुत साधारण तथा सरतलम थी, परन्तु इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि आधुनिक जटिल तकनीकि और प्रौद्योगिकी तक पहुंचने का मार्ग इन्हीं के कारण प्रसस्त हो पाया है। प्रसिद्ध विचारक इमैनुएल गट्टन के अनुसार ''प्रौद्योगिकी मानव क्षमताओं का विस्तार है, जिसके द्वारा वह अपने पर्यावरण को नियंत्रित करता है। उसमें संशोधन करता है, और उसे अपने अनुकूल बनाता है।'' विचारक मैकार्गन प्रौद्योगिकी को आठ आयमों में वर्गीकृत करते हैं, जिनमें भौतिक स्वरूप, निम्रण प्रक्रिया, उद्देश्य संसाधन, तकनीकि ज्ञान, सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ और अभ्यास कर्ता की मानसिक स्थिति। मरियम–वेदस्टर डिक्सनरी के अन्तर्गत प्रौद्योगिकी को ज्ञान का व्यावहारिक अनुप्रयोग, विशेष रूप से किसी विशिष्ट क्षेत्र में या किसी कार्य को पूरा करने का तरीका जिसमें तकनीकि प्रक्रियाओं या विधियों का उपयोग सम्मिप्त हो के रूप में समझाया गया है। सामान्य शब्दों में प्रौद्योगिकी को मानव जीवन तथा रहन–सहन और सुरक्षा संरक्षण के अप्राकृतिक, मानवनिर्मित सूत्रों/तरीकों/माध्यमों/ कार्यप्रणालियों को प्रौद्योगिक के रूप में जाना जा सकता है।

कीवर्ड: –परम्परागत प्रौद्योगिकी–टम्टाकारीगर, निर्माण एवं मरम्मत, भण्डारण, बर्तन–उपकरण, टम्टागिरी, ढोल, दमाऊ, निशाण कलस, भंकोर, वाद्य यन्त्र, स्थानीय उत्पादन, शिल्पकार, उपजातिय समूह।

परिचय: टम्टागिरी का व्यवसाय यहाँ के अनुसूचित जाति के लोगों का एक परम्परागत रूप से वंशानुगत कारीगरी का व्यवसाय है और प्राचीन समय में जब सामाजिक जीवन मुख्यतया कृषि, उत्पादन और पशुपालन आदि कार्यों से चलता था, टम्टाओं द्वारा बनाई गई वस्तुओं का योगदान भोजन बनाने के बर्तन, जल को भण्डारित करने के बर्तन आदि का निर्माण तथा मरम्मत करने को लेकर था तथा पुराने समय में इनका यह व्यवसाय भली–भांति प्रफुल्लित था। प्राचीन समय में कार्यों के बदले मुद्रा का प्रचलन न के बराबर था। सेवा मूल्यों को वह अपने सेवा लेने वालों से अनाज, उपहार आदि के रूप में पाते थे और इस आधार पर परिवारों का पोषण करते थे। सीमित मात्रा में सिक्कों को ढालने के कार्य को भी गढ़वाल–कुमाऊँ में टम्टा कारीगरों द्वारा किया जाता था। परिवर्तन के क्षेत्र जैसे प्रौद्योगिकी, यातायात तथा संचार की सुविधाऐं आधुनिकीकरण, नगरीकरण तथा पलायन की प्रक्रियाओं के आ जाने के कारण सामाजिक परिवर्तन का पर्दापण हुआ और इसके चलते टम्टागिरी से कारीगरी के उत्पादन की मांग कम हुई है और साथ ही साथ बाजारी प्रतियोगिता के सामने यह कार्य अपने आपको स्थापित करने में अच्छी तरह से सफल नहीं हो पाये/नहीं हो पा रहे हैं। बाजारी उत्पादनों के सामने विभिन्न परिस्थितियों के चलते ठीक से नहीं चल पा रहे हैं। परिणाम स्वरूप अब परिवार के आर्थिक आवश्यकता भरण–पोषण हेतु काफी टम्टा लोगों ने टम्टागिरी के अलावा अन्य अवसरों एवं कार्यों को अपना लिया है। टम्टागिरी के अधिकतर लोगों ने अपने इस परम्परागत व्यवसाय को छोड़ दिया है।

टम्टाओं के द्वारा निर्मित किये जाने वाले प्रमुख परम्परागत उपकरण/बर्तनों आदि का विवरण

उपकरण/बर्तन/वस्तु का नाम	उपयोग
गागर	जल संग्रहण एवं भण्डारण
बन्ठा	जल संग्रहण एवं भण्डारण
तोला	जल संग्रहण एवं भोजन बनाने में
परात	भोजन परोसने एवं आटा गोदने आदि
गेडू	अधिक लोगों हेतु दालें आदि बनाने में प्रयुक्त
भंकोर	देव आवह्न ध्वनि उत्पन्नकर्ता
ढोल	देव आवह्न लय, संगीत, ध्वनि उत्पन्नकर्ता
दमाऊं	देव आवह्न लय, संगीत, ध्वनि उत्पन्नकर्ता
कलश	मन्दिर में शिवलिंग में जल चढ़ाने के लिए प्रयुक्त उपकरण
मन्दिर कलश	मन्दिर की शिखा पर प्रयुक्त
घण्टियां	पूजा, अर्चना, जागरण में प्रयुक्त
निशाण का कलश	देवध्वज (निशाण) की चोटी पर प्रयुक्त

आचमनी	यज्ञ में प्रयुक्त
तमाली	यज्ञ, पूजन में प्रयुक्त
तामी	अनाज तोलने के या माप के लिए
लोटा	पानी पीने में प्रयुक्त
तांबे का गंगाजल पात्र	गंगाजल रखने हेतु प्रयुक्त
तांबे या पीतल की चीमनियां	प्रकाश उत्पन्न करने में प्रयुक्त

टम्टाओं के द्वारा भंकोर का निर्माण किया जाता है। इन क्षेत्रों में भंकोर एक पराम्परागत वाद्य यन्त्र होता है, जो उत्तराखण्ड के समाज में प्राचीनतम समय से ही उपयोग में आता रहा है, यह यंत्र तांबे का खोल बनने पर आधारित है। इसके एक सिरे पर बजाने वाला व्यक्ति फूंक देकर हवा देता है तथा इसके दूसरे छोर से तीव्र तथा उत्तेजनात्मक ध्वनि उत्पन्न होती है, इसका एक सिरा संकरा तथा दूसरा सिरा इसके सापेक्ष चौड़ा होता है। अनुसंधान क्षेत्र तथा उत्तराखण्डी पहाड़ी समाज में इसे मुख्य तौर पर देव उपासना के शुभ अवसर पर बजाया जाता है। इसकी ध्वनि को देव उपासना जागरण तथा ताल बजाने के समय समायोजित किया जाता है। इस यन्त्र को विशेषकर कालिंका देवी की उपासना तथा निरंकार देवता की उपासना के अवसर पर बजाया जाता है।

अनुसंधान क्षेत्र में टम्टागिरी के कार्यों में परम्परागत वाद्य यन्त्र ढोल को भी बनाया जाता है। उनके द्वारा तांबा धातु का ढोल बनाया जाता है और केवल ढोल के आवरण खोल को ही बनाते हैं। ढोल पर पुड़ी को लगाने का कार्य उनके द्वारा नहीं किया जाता है। ढोल एक प्राचीनतम वाद्य यन्त्र है तथा उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र का सबसे मुख्य और उपयोगी वाद्य यन्त्र है। ढोल मांगलिक कार्यों, देवपूजन, देवी उपासना तथा विवाह, उत्सवों आदि अवसरों पर बजाया जाता है।

टम्टागिरी के कार्यों के अन्तर्गत दमाऊँ भी तांबे का बना एक वाद्य यन्त्र होता है जो ढोल का सहायक यन्त्र है। उत्तराखण्ड में ढोल के साथ बजाया जाने वाला वाद्य यन्त्र दमाऊँ है एक दूसरे, अर्थात ढोल और दमाऊँ के साथ के बिना रसमय तालों को देना संभव नहीं होता है। ढोल का पूरक वाद्य यन्त्र दमाऊँ है। उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों का यह भी प्राचीनतम तथा प्रभावी वाद्य यन्त्र है। इसके साथ ही साथ टम्टाओं के द्वारा तांबे तथा पीतल के छोटा बड़ा भंकोर, निशाण कलश बनाया जाता है। स्थानीय ध्वज जिसे मांगलिक देवापसना तथा विवाह के समय फहराया जाता है उसे स्थानीय स्तर पर अनुसंधान क्षेत्र में निशाल कहा जाता है। निशाणों का अध्ययन तथा जानकारी करने पर यह पाया कि अनुसंधान क्षेत्र तथा उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र गढ़वाल तथा कुमाऊँ में दो रूप में पाया जाता है प्रथम निशाण (ध्वज) विवाह निशाण– यह निशाण, पहाड़ों में वर पक्ष के द्वारा वधू पक्ष को लेने जाते समय उपयोग की जाती है। बारात दल के साथ दो निशाणे चलती हैं। एक सबसे आगे और दूसरी बाताियों के सबसे पीधे ध्वजवाहक लकड़ीके बड़े डन्डे या बांस के डण्डे की सहायता से निशाणों का परिचालन होता है। पीछे देवीय संरक्षण, शुभकामना तथा वधू के घरक` बारात जाने का सन्देश छुपा होता है। इसका रंग सफेद होता है तथा इसका आकार त्रिभुज की तरह का होता है। दूसरी निशाण का आकार भी त्रिभुजाकार होता है और इसका रंग लाल होता है। इन निशाणों पर देवी–देवताओं की आकृतियां बनी होती हैं। विशेषण रूप से श्री गणेश जी का चित्र बना होता है। इनके ऊपर

चढ़ने वाले कलश का निर्माण भी परम्परागत रूप से टम्टाओं के द्वारा किया जाता है। दूसरे प्रकार की निशाण के अन्तर्गत यह देवी कालिका (काली) की उपासना के समय फहराई जाती है। इसे उत्तराखण्ड के गढ़वाल तथा कुमाऊँ और अनुसंधान क्षेत्र में न्याजा कहा जाता है। न्याजा एक पवित्र ध्वज होता है। यह आयताकार तथा सफेद रंग का लम्बा पट्टा जैसा होता है। इसके शीर्ष पर लाल रंग के कपड़े का भी प्रयोग होता है।

टम्टाओं द्वारा बर्तन के रूप में वह गागर (पानी को रखने का पात्र) का निर्माण किया जाता है। साक्षात्कार के दौरान वार्तालाप करने पर टम्टाओं ने यह बताया कि उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में प्राचीन समय से ही गागरों को बनाया जाता हे। गागर का निर्माण उनके द्वारा तांबे की धातु का प्रयोग करके तैयार किया जाता है तथा वर्तमान समय में भी यह कार्य होता है।

क्षेत्रों में अपनी बेटी के विवाह संस्कार में यह उपहार विवाह के समय आवश्यक रूप से उपहार स्वरूप दिया जाता रहा है। ताकि अपने ससुराल में अपने परिवार वालों को स्वच्छ तथा ताजा जल पीने के लिए उपलब्ध करा सके। गढ़वाल तथा कुमाऊँ में प्रत्येक परिवार अपनी पुत्री की शादी के अवसर पर गागर को अपनी पुत्री को भेंट स्वरूप दान करता है। यह पात्र विभिन्न पक्षों को लेकर पवित्र भी माना जाता है। विवाह के प्रथम दिन अपने ससुराल में नव–विवाहिता दुल्हन अपने नन्दों (अर्थात पति की बहनों) के साथ अपनी प्रथम सुबह में ससुराल के प्राकृतिक स्रोत जिसे स्थानीय भाषा में पंदेरा (धारा) कहा जाता है अपने पिता के प्राप्त ताँबे की गागर को लेकर जल स्रोत में जाती है तथा इस पात्र में जल को भरकर घर में लाकर अपनी ससुराल के पक्ष के सम्बन्धियों जैसे–सास–ससुर, जेठ–जेठानी, देवर–देवरानी आदि को जल पिलाती है। तथ्य का अधिक विश्लेष्ज्ञण करने पर यह पाया गया कि इसमें अपने गांव क्षेत्र के प्राकृतिक स्रोत में जाना ही अनिवार्य होता है। अन्य माध्यमों से प्राप्त जल को प्रथम बार नई वधू के द्वारा अपने ससुराल पक्ष के परिवार वालों को जल पिलाये जाने की प्रथा नहीं है।

निष्कर्ष– निष्कर्षतया यह तथ्य टम्टागिरी के कार्यों से प्रकट होता है कि टम्टाओं के द्वारा अपनी लघु कार्यशालाओं में अपने कौशल तथा परम्परागत प्रौद्याोगिकी के माध्यम से समाज तथा जन उपयोगी, उपकरणों, वस्तुओं, बर्तनों आदि के नव निर्माण तथा मरम्मत का कार्य प्राचीन समय से ही परम्परागत रूप से किया जाता था और वर्तमान में भी किया जा रहा है। यह अवश्य है कि अब बड़े–बड़े समूहों या अधिकतर टम्टा सदस्यों के तुलना में कम ही कारीगरों के द्वारा टम्टागिरी का कार्य किया जा रहा है, जिनकी कारीगरी अपनी पराम्परागत प्रौद्योगिकी को समाहित करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

- कठोच यशवन्त सिंह, 1981 मध्य हिमालय का पुरातत्व
- गार्डन डी0 एच0 1970 भारतीय संस्कृति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- जोशी, अवनीन्द्र कुमार–1939 – उत्तराखण्ड के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुर्नजागरण में आर्यसमाज और रामकृषण मिशन का योगदान
- जोशी महेश्वर प्रसाद कु0 ललित प्रभा – 1994 – उत्तरांचल हिमालय

- मठपाल यशोधर 1987 – प्रागैतिहासिक मानव के कार्यकलाप
- मठपाल यशोधर 1992 – उत्तराखण्ड की अधेतिहासिक संस्कृति तथा कल (आलेख) पहाड़ नैनीताल
- भक्त दर्शन – 1980 गढ़वाल की दिवंगत विभूतियां
- गूगल साइटेशन

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation